National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(61): 67-71
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. पूनम कुमारी
पूर्व सहायक संस्कृत प्रवक्ता,
दयानन्द महाविद्यालय, हिसार।

Correspondence:
डॉ. पूनम कुमारी
पूर्व सहायक संस्कृत प्रवक्ता,
दयानन्द महाविद्यालय, हिसार।

सृष्टि विकास का भारतीय- चिन्तन

डॉ. पूनम कुमारी

सारांश

सृष्टि विकास का चिन्तन वेदों से आरम्भ होता है यह पूर्णरूप से ईश्वरीय रचना है जो हमेंसृष्टि की उत्पत्ति व विकास की जानकारी देते हैं वेद का अर्थ ही है -ज्ञान। भारतीय चिन्तन में सम्पूर्ण अस्तित्व का नाम ब्रह्म है। वेदों में कहीं पुरूश, कहीं नासदीय, कही हिरण्यगर्भ आदि सेसृष्टि की उत्पत्ति हुई, परमाणु, सांख्य में प्रकृति और वेदान्त में ब्रह्मा सेसृष्टि की उत्पत्ति मानी है। यहाँ सब सत्य है - परमेश्वर निमित्त और प्रकृति उपादन कारण है। आदिसृष्टि का निवास स्थान त्रिविश्टप रहा जहाँ पर सबसे पहले आर्य लोग बसे। इन आर्यो के नाम पर ही हमारे देश का नाम आर्यवर्त्त हुआ। वैदिक मानवसृश्टि सम्वत् के अनुसार मानव की उत्पत्ति 1,96,08,53,115 वर्ष पूर्व हुई थी। मनुस्मृति के अनुसार - छह मन्वन्तर बीत चुके है सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है।सृष्टि ईश्वर की सबसे सुन्दर रचना है। आज के इस वैज्ञानिक व भौतिकवादी युग में विज्ञान अति अग्रणी है। वेद कहता है कि मनुश्य भौतिक उन्नति व आध्यात्मिक उन्नति साथ-साथ करें तभी सच्चे अर्थों में हमारीसृष्टि का विकास होगा। ईश्वर की इस सुन्दर रचना को सुन्दर बनाये रखने के लिए अपने हृदयों को उच्च, कल्याणकारी भाव से संजोये।

प्रस्तावना -

सृष्टि विकास का चिन्तन वेदों से आरंभ होता है। वेद जो कि ईश्वर की प्रारम्भिक रचना है। इन्हीं चारों वेदों से सृष्टि की उत्पत्ति व विकास की जानकारी मिलती है। ऋग्वेद में उपलब्ध सृष्टि उत्पत्ति विषयक सूक्तों में 'पुरुष सूक्त' को महत्वपूर्ण मानते हैं इसमें सृष्टि और पदार्थों की उत्पत्ति का वर्णन प्राप्त होता है। भारतीय चिंतन में संपूर्ण अस्तित्व का नाम ब्रह्म है। ब्रह्मसूत्रों में सृष्टि जगत के रहस्य है उपनिषदों में वर्णित दार्शनिक सूत्रों की व्याख्या है वह ब्रह्मा ही वेद शास्त्रों में जगत का कारण कहा गया है- "शास्त्रयोनित्वात्"। गीता सभी दर्शनों का अभूतपूर्व मिलन है। इसलिए ब्रह्मसूत्र, गीता उपनिषद को प्रस्थानत्रयी की संज्ञा दी जाती है, प्रस्थानत्रयी के बीज विचार अथर्ववेद में है।

1. ऋग्वेद आधारित सृष्टि विकास -

ऋग्वेद में 10वें मंडल के पुरुष सूक्त मेंसृष्टि उत्पत्ति के विषय में बताया गया है। इसी विराट पुरुष से चारों वेदों का आविर्भाव हुआ गांव, जंगल, पशुओं की उत्पत्ति, सूर्य-चंद्रादि ग्रहों की उत्पत्ति हुई। श्लोक के माध्यम से बताया गया है -

"सहस्रशीर्शा पुरूशः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिश्ठद्दशांगुलम्।।"

ऋ. पुरूश सूक्त (10.90/1)

अर्थात - यह परम पुरुष विराट परमेश्वर हजारों सिर वाला, हजारों आंखों वाला और हजारों पैरों वाला है। वह भूमि को चारों ओर से व्याप्त करके दस अंड्गुल प्रमाण में ब्रह्मांड को पार करके स्थित है

ऋग्वेद के हिरण्यगर्भ सूक्त व नासदीय सूक्त भी सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में बताते हैं। नासदीय सूक्त का श्लोक कहता है -

"इयं विसृश्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।

यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन सो अड्.ग वेद यदि वा न वेद।।"

(10.129/7)

अर्थात -

एक विविध प्रकार की सृष्टि जिस प्रकार उपादान और निमित्त कारण से उत्पन्न हुई है यह कारण अर्थात् ईश्वर की सृष्टि को धारण किए हुए हैं। इस सृष्टि को जो स्वामी ईश्वर उत्कृष्ट सत्यरूप आकाश के सदृश आकाश के सदृश अपने प्रकाश में प्रतिष्ठित है। यह सुखस्वरूप परमात्मा ही उसको जानता है उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

2. ब्रह्मसूत्र कहता है -

ब्रह्मसूत्र अथर्ववेद व उपनिषद दर्शन का सार है। ब्रह्मसूत्र में बड़ी बात को अल्प शब्दों में प्रकट किया गया है। ब्रह्मसूत्र का पहला सूत्र ध्यान देने योग्य है -

"अथातो ब्रह्म जिज्ञासा।" अर्थात् अब ब्रह्मा की जिज्ञासा है। दूसरा सूत्र - "जन्माद्यस्य यतः।" अर्थात् यहां जिससे जन्मादि होते हैं। संपूर्ण अर्थ यही हुआ कि वही ब्रह्मा जिससे जन्मादि होते हैं। जन्मादि का अर्थ ही विस्तृत है -युवा, बुढापा, मृत्यु, सृष्टि, स्थिति, विकास और प्रलय।

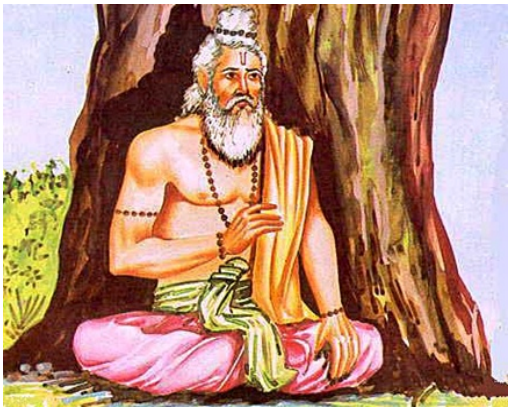

"अक्षरब्रह्म" बृहदारण्यक उपनिशद (3-8-7) में अक्षर की विवेचना है - विदुशी गार्गी ने महर्षि याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ के दौरान पूछा - हे महर्षि - जो द्युलोक से ऊपर है, पृथ्वी से भी नीचे है, इन दोनों के बीच में भी है जिसे भूत, भविष्य और वर्तमान कहते हैं वह काल किसमें ओर-प्रोत है। महर्शि याज्ञवल्क्य ने कहा - उसे ब्रह्मवेता अक्षर कहते हैं। अक्षर समूची सृष्टि में विद्यमान है। दर्शन में रहस्यपूर्ण है उन्हें ब्रह्मज्ञानी ही जानते हैं ब्रह्मसूत्र (1-3/100) में अक्षर ही ब्रह्म है।

3. सांख्यदर्शन की सृष्टि विषयक अवधारणा -

सांख्यदर्शन एक ऐसा दर्शन है जोसृष्टि प्रक्रिया के लिए ईश्वर की सत्ता ने मानकर प्रकृति और पुरुष के संयोग को सृष्टि का कारण स्वीकार करता है। इसमें प्रकृति को सक्रिय होने के कारण गमनकर्त्ता अंधे के समान तथा पुरुष को निष्क्रिय होने के कारण निर्देशक लंगड़े के समान बतलाया गया है।

"पुरूष्य दर्शनार्थं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य।

पंग्वन्ध वदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्ग"

प्रकृति और मनुष्य का संयोग हो जाने पर प्रकृति से महत तत्त्व (बुद्धितत्त्व), महत्त तत्त्व से अहंकार उत्पन्न होता है। अहंकार से पांच तन्मात्राएं (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) पांच ज्ञानेंद्रियां (श्रोत, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण), पांच कर्मेंद्रियां (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ) तथा मन इन सोलह तत्वों का समुदाय उत्पन्न होता है। पांच तन्मात्राओं से पुनः पांच महाभूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी) उत्पन्न होते हैं। कहा भी गया है -

"प्रकृतेर्महांस्ततोऽहंकारस्तस्माद् गणश्च षोडशकः।

तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्च भूतानि।।"

4. वेदान्तसार की सृष्टि विषयक अवधारणा -

उपनिषदों में आत्मा तथा ब्रह्म का विषय वर्णित है आत्मा और ब्रह्मसंबंधी वर्णन के आधार पर जिस परंपरा का उदय हुआ वही आगे चलकर वेदांत के नाम से जानी जाने लगी। वेदांत का प्रमुख सिद्धांत परिणामवाद है। सृष्टिप्रक्रिया में वेदांत सांख्य के विपरीत है वेदांतियों का मानना है कि अचेतन अथवा जड़पदार्थ सृष्टिकर्ता कदापि नहीं हो सकते। कोई चेतन की सृष्टिकर्त्ता हो सकता है। अतः वेदांती चेतन ब्रह्मा को ही सृष्टि का कर्त्ता मानते है। स्थूल सृष्टि का निर्माण विशेष प्रक्रिया द्वारा होता है। पांच तन्मात्राओं के संयोग से स्थूल महाभूतों की उत्पत्ति होती है जिससे स्थूल शरीर का निर्माण होता है। स्थूल शरीर चार प्रकार के होते हैं।

1. जरायुज - मनुष्य इत्यादि इसी श्रेणी में आते हैं।

2. अण्डज - पक्षी, सर्प इत्यादि अण्डज की श्रेणी में आते हैं।

3. स्वेदज - स्वेज से उत्पन्न होने वाले जूं, कीट आदि।

4. उद्भिज्ज - वृक्ष, लता इत्यादि उद्भिज्ज की श्रेणी में आते हैं।

संसार के आवागमन से रहित हो जाने को मोक्ष कहते है। वेदांतदर्शन में कहा गया है कि गुरु उपदेश, आत्मज्ञान अथवा श्रुतियों को पढ़ने से ब्रह्म की प्राप्ति हो जाना ही मोक्ष है।

5. श्रीमद्भागवत की अवधारणा -

भारतीय पुराणसाहित्य में श्रीमद्भागवत को समस्तश्रुतियों का सार, महाभारत का तात्पर्य निर्णायक तथा ब्रह्मसूत्रों का भाश्य कहा जाता है इसमें सृष्टि की रचना से लेकर कलयुग यानी सृष्टि के विनाश तक की कहानी है। इसमें भगवान के अवतारों की कथाओं से के जरिए जीवन में कर्म और अन्य शिक्षकों को पिरोया गया है। भागवत् व्यवहारिक और गृहस्थ जीवन का ग्रंथ है।

6. सत्यार्थप्रकाश की सृष्टि-विषयक अवधारणा -

महर्शिदयानन्द सरस्वती ने उन्नीसवीं शताब्दी में अपना कालजयी ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश रचकर मानो सारे संशयों का निवारण ही कर दिया। महर्शि ने भी अपने ग्रंथ में स्पष्ट किया है कि ईश्वर, जीव, प्रकृति तीनों अनादि व नित्य हैं। सृष्टि नियम भी अनादि नित्य व सार्वभौमिक सत्य है।

"यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति।
यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्मेति।।"

(तैत्तिरीयोप, भृगुवल्ली। अनु. 1)

"द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिशस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।।"

ऋ.।म.1।सू. 164। मं 20।।

द्वा (जो ब्रह्म और जीव दोनों (सुपर्णा) चेतनता आदि पालनादि गुणों से कुछ सदृश (सयुजा) व्याप्यव्यापक भाव से संयुक्त (सखाया) परस्पर मित्रतायुक्त सनातन अनादि है और (समानं) वैसाहि (वृक्षम्) अनादि मूलरूप कारण और शाखारूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्न-भिन्न हो जाता है। वह तीसरा अनादि पदार्थ इन तीनों के गुण, कर्म, स्वभाव भी अनादि है। (तयोरन्य) जीव और ब्रह्म में एक जो जीव है वह इस वृक्ष रूप संसार में पाप-पुण्यरूप फलों को (स्वाद्वति) अच्छे प्रकार भोगता है और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलों को (अनश्नन्) न भोगता हुआ चारों ओर अर्थात भीतर-बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है। जीव से ईश्वर, ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भिन्न स्वरूप तीनों अनादि है।

"सर्वं खल्विदं ब्रह्म् नेहास्ति न तत् क्वचित्।"

यह छान्दोग्य उपनिशद् का वचन है।

जो यह जगत है वह सब निश्चय करके ब्रह्म है। दूसरे नाना प्रकार के पदार्थ कुछ भी नहीं किंतु सब ब्रह्मरूप है।

जगत के तीन कारण बताए गए है। एक निमित्त, दूसरा उपादान, तीसरा साधारण।

1. निमित्त कारण -

निमित्त कारण तो हैं - एक संपूर्ण सृष्टि को कारण से बनाने, धारण करने और प्रलय करने तथा सबकी व्यवस्था रखने वाला मुख्य निमित्त कारण परमात्मा है।

दूसरा - परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेक विध कार्यान्तर बनाने वाला साधारण निमित्त कारण-जीव।

2. उपादान कारण -

प्रकृति 'परमाणु' जिसको सब संसार के बनाने की सामग्री कहते है। वह जड़ होने से अपने आप न बन और न बिगड़ सकती है किंतु दूसरों के बनाने से बनती और बिगड़ती है जैसे - परमेश्वर के रचित बीज पृथिवी पर गिरने और जल पाने से वृक्षाकार हो जाते हैं और अग्नि आदि जड़ के संयोग से बिगड़ भी जाते है।

3. साधारण कारण -

जब कोई वस्तु बनाई जाती है तब जिन-जिन साधनों से अर्थात ज्ञान, दर्शन, बल, हाथ और नाना प्रकार के औजार (साधारण कारण है)। जैसे - घड़े को बनाने वाला कुम्हार निमित्त, मिट्टी-उपादान, दण्ड, चक्र आदि साधारण कारण है।

"यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च।"

मुण्डकोपनिशद (मु.1।ख. 1। मं. 7)

जैसे मकड़ी बाहर से कोई पदार्थ नहीं लेती अपने में से तो तंतु निकाल जाला बनाकर आप ही उसमें खेलती है वैसे ब्रह्म अपने में से जगत को बना आप जगदाकार बन आप ही क्रीड़ा कर रहा है।

7. आदि सृष्टि का स्थान

मनुष्यों की आदि सृष्टि जिस स्थान पर हुई उसे 'त्रिविश्टप' आधुनिक समय में तिब्बत कहते है आदि सृष्टि में एक ही जाति थी और वह भी मनुष्य जाति। मनुष्य जाति में जो श्रेष्ठ थे उन्हें - 'आर्य', विद्वान अथवा देव कहा गया इसके विपरीत जो दुश्ट थे उन्हें मूर्ख, अनाड़ी व 'दस्यु' नाम दिया गया। जब आर्य और दस्युयों में आपस में उपद्रव होने लगे तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि पर आकर बसे इसी से इस देश का नाम 'आर्यवर्त' हुआ।

"आसमुद्रातु वै पूर्णादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तर गिर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः।।
सरस्वती दृशद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देशमार्यावर्त्तं प्रचक्षते।।"

मनु. (2/22, तु. 22/17)

ब्रह्मा के पुत्र विराट, विराट का मनु, मनु के मरीच्यादि दश इनके स्वयम्भू आदि सात राजा और उनके संतान इक्ष्वाकु आदि राजा जो आर्यवर्त्त के प्रथम राजा हुए जिन्होंने यह आर्यवर्त्त बसाया था।

"सत्येनोत्तभिता भूमिः।" ऋग्वेद (10/75/1)

(सत्य) अर्थात जो त्रैकाल्याबाध्य, जिसका कभी नाश नहीं होता उस परमेश्वर ने भूमि आदि सब लोकों को धारण किया है।

"सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम्।।" यजुर्वेद (13/4)

पृथिव्याधि प्रकाशरहित लोक-लोकान्तर और पदार्थ तथा सूर्यादि प्रकाशसहित लोक और पदार्थों की रचना-धारण वही परमात्मा करता है जो सब में व्यापक हो रहा है।

8. स्वामी विद्यानन्द जी का महाभारत से

प्रस्तुत प्रमाण -

"हिमालयाभिधानोऽयं ख्यातो लोकेशु पावकः,
अर्धयोजनविस्तारः पंचयोजनमायतः।
परिमण्डलयोर्मध्ये मेरूरूत्तमपर्वतः,
ततः सर्वाः समुत्पन्ना वृत्तयो द्विजसत्तमः।।"

संसार में पवित्र हिमालय है। उसके अंतर्गत आधा योजन चौड़ा और पांच योजन लंबा सुमेरु पर्वत है जहां मनुष्य की उत्पत्ति हुई। यहां से ऐरावती, वितस्ता, विशाल, देविका और कुह आदि नदियां निकलती है। सुमेरु पर्वत का महाभारत के उक्त श्लोकों में निर्देश किया गया है "देविका पश्चिमे पार्श्वे मानसं विद्धसेवितम्।"

सुमेरु पर्वत के पास देविका के पश्चिमी किनारे पर मानसरोवर है जो तिब्बत के अंतर्गत है। वैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्यों के आदि युग में मानसरोवर के आसपास का क्षेत्र समशीतोश्ण जलवायु से युक्त है।

9. आधुनिक वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिन्स का मत -

आधुनिक काल के प्रख्यात ब्रह्मांड वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंस लिखते हैं कि सृष्टि और समय एक साथ प्रारंभ हुए। जब ब्रह्म ब्रह्मांड उत्पति की कारणी भूत घटना आदिद्रव्य में बिगबैंग हुआ और इस विस्फोट के साथ ही अव्यक्त अवस्था से ब्रह्मांड व्यक्त अवस्था में आने लगा इसी के साथ समय भी उत्पन्न हुआ। अतः सृष्टि और समय एक साथ आरंभ हुए और समय तब तक रहेगा जब तक यह सृष्टि रहेगी।

10.सृष्टि की समय-सीमा -

वैदिक मानव सृष्टिसम्वत् के अनुसार मानव की उत्पत्ति 1,96,08,53,115 वर्ष पूर्व हुई थी वैज्ञानिक अवधि भी इसी के लगभग है। मनुस्मृति एक धार्मिक ग्रंथ है। जिसके अनुसार सृष्टि का यह सातवां मनवन्तर है इससे पहले 6 मनवन्तर बीत चुके हैं ये है - स्वायम्भुव, स्वारोचिस, औत्सी, तामस, रैवत, चाक्षुश - ये छह बीत चुके है। सातवां - वेवस्वत मनवन्तर चल रहा है। 71 चतुर्युगियों का नाम एक मनवन्तर है

17 लाख 28 हजार वर्श का एक सतयुग

12 लाख 96 हजार वर्श का त्रेता

8 लाख 64 हजार वर्शों का द्वापर

4 लाख 32 हजार वर्शों का कलियुग। इन चार युगों कायोग 43 लाख 20 हजार हुआ जो एक चतुर्युगी हुई।ऐसी 71 चतुर्युगियों अर्थात् - 30 करोड़ 67 लाख 20 हजार वर्षों का एक मनवन्तर है और ऐसे 6 मनवन्तर अब तक बीत चुके हैं। अतः सृष्टि रचना को देखकर आश्चर्ययुक्त होकर कहना पड़ता है कि ईश्वर कितना महान व शक्तिशाली है।

11. सृष्टि विकास का आधार -

शिक्षा, समाज, राष्ट्र विकास की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा का विकास ही समाज का विकास व समाज का विकास ही सृष्टि का विकास है। सृष्टि आरंभ में वेदों का ज्ञान अपने आप में पूर्ण व सर्वांश सत्य है। धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति ही जीवन का उद्देश्य है। मनुष्य धर्म व मनुष्य के समस्त कर्त्तव्य अकर्त्तव्यों का ज्ञान वेद से ही प्राप्त हो सकता है। वेद देववाणी संस्कृत में है। वैदिक शब्दों का निर्वचन निरुक्त व निघण्टु आदि ग्रंथों की सहायता से प्राप्त हो सकता है। वेदाध्ययन वेदाध्यायी को ईश्वर उपासना में प्रवृत्त करते हैं जिससे ईश्वर व जीवात्मा का साक्षात्कार होता है। इस अवस्था में पहुंचकर मनुष्य जीवनमुक्त अवस्था को प्राप्त कर लेता है। वह ईश्वरोपासना करते हुए परोपकार, सेवा, देश-समाज, संसार के हित व कल्याण के लिए कार्य ही करता है। उसका मुख्य कार्य दूसरों के कल्याणार्थ सद्ज्ञान का प्रचार व प्रसार करना होता है। हमारीसृष्टि निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर होती है।

12.मध्यकालीन दयनीय अवस्था -

सृष्टि विकास की इस प्रक्रिया में कई बार गतिरोध उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसे ही मध्यकाल में भारत (आर्यावर्त्त) कहलाने वाले हमारे देश की स्थिति काफी खराब थी। यवनों के आक्रमण शुरू हुए और चहुँ ओर अविद्या और विज्ञान का माहौल पैदा हो गया। यवनों द्वारा मंदिरों को लूटा गया, राजाओं की हत्याएं की गई, स्त्रियों से दुर्व्यवहार किए गए। ऐसे समय में ही रक्षाबंधन और भाईदूज जैसे पर्व आरंभ हुए। जब महिलाओं ने खुद को असुरक्षित पाया। ऐसे निराशा और अज्ञानता के अन्धकार भरे समय में अगर किसी ने आशा और विश्वास की, ज्ञान रूपी प्रकाश की ज्योति जलाई तो वह थे महर्षि दयानंद सरस्वती (1825-1883) इस समय स्त्रियों की दशा दयनीय थी। विद्या के अभाव में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र सभी का पतन हो रहा था। बाल-विवाह, सतीप्रथा जैसी कुप्रथाएं प्रचलित थी जिससे समाज जर्जरित हो गया था। महर्शि मनु के अनुसार -

"यत्र नार्य पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।"

जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं।

ऋषि दयानंद ने मनु के वचनों का उच्च स्वर में उद्घोष किया। उन्होंने नारी जाति की स्थिति के प्रति संवेदना व्यक्त की और वेद व वेदानुकूल ऋषियों के ग्रंथों के अनुसार उन्हें पुरुषों के समान अध्ययन-अध्यापन में युवावस्था में स्वयंवर रीति से विवाह करने के अधिकार दिए अपितु कहा गया कि नारी जाति का स्थान पुरुषों की तुलना में उच्च है। वेद अध्ययन व शिक्षा के लिए पाठशालाएं एवं गुरुकुल खुले जहां कन्याओं को प्रविष्ट किया गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि समाज को न केवल शिक्षित महिलाएं अपितु वेद विदुषी नारियां व आचार्यायें भी मिली। इन व्यवस्थाओं व विधानों के कारण नारी जाति किसी की सबसे अधिक कृतज्ञ व आभारी है तो ऋषि दयानंद जी की। ऋषि की शिक्षाओं में नारियों के लिए पर्दा वह घूंघट का कोई स्थान नहीं है।

13. सृष्टि कल्याणार्थ वेद अनिवार्य –

वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। वेद किसी एक देश या मनुष्य के लिए नहीं अपितु संपूर्ण मानवमात्र के लिए है। वेद में निहित ज्ञान को तर्क व विज्ञान की कसौटी पर परखा जा सकता है। वास्तव में सृष्टि ही विज्ञानमय है। ईश्वर के विज्ञान को ही वेद कहते हैं। वेदों को विश्व की प्रथम पुस्तक की मान्यताएँ 'यूनेस्को' ने भी प्रदान की है और संपूर्ण देशों के बीच दीवारें और दुश्मनी विचारधारा के कारण है। वेद जब उपदेश करता है "कृण्वन्तों विश्वम् आर्यम्" इसका अर्थ हुआ कि संसार के मनुष्य को श्रेष्ठ बनाओ जिससे संसार से अज्ञान, अन्याय, अभाव दूर हो सके। हमारे देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त्त या देश के मूल निवासी आर्य कहलाते थे जो कि वेदों के अनुयायी थे। हमारा गौरवशाली इतिहास - वेदों के ही कारण है। हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई इत्यादि नाम से पूर्व यह पूरा समाज ही आर्य समाज था। अतः महर्षि ने किसी नए समाज की नींव नहीं रखी अपितु पुराने गौरव को पुनर्जागृत किया। महर्शि दयानंद सरस्वती आधुनिक विश्व के प्रमुख प्रथम विचारक हैं जिन्होंने "सत्यार्थप्रकाश" में सबके लिए अनिवार्य व निशुल्क प्राथमिक शिक्षा का सिद्धान्त रखा। उनके एक प्रमुख शिष्य दर्शनानंद जी ने भारत में सबसे पहले निःशुल्क

शिक्षाप्रणाली का प्रयोग किया। उन्होंने कहा कि कृषकों व श्रमिकों का समाज में सम्मान का स्थान है। किसान हमारा अन्नदाता है व श्रमिक हर कार्य में हमारा सहयोग करते हैं। विकास के मापदंड का आधार पांच घटक हैं - व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और सृष्टि। अतः सृष्टि के विकास में इन सब की महत्वपूर्ण भूमिका है।

14.आज की वैज्ञानिक अवधारणा -

आज के वैज्ञानिक ईश्वरीय ज्ञान को भुलाकर मन व मस्तिष्क से चिंतन कर रहे हैं यही कारण है कि आज संपूर्ण विश्व भ्रष्टाचार, नारी अपमान, उग्रवाद, परमाणु युद्ध आदि खतरों के उफान पर खड़ा है। वेद में भी भगवान ने भौतिक उन्नति को नकारा नहीं है अपितु ईश्वरीय रचना में विद्यमान प्रत्येक वस्तु का प्रयोग मानव-कल्याण के लिए करने का आदेश दिया है। प्राचीन ऋषि-मुनियों का ज्ञान उनकी योग-शक्ति, उनकी तपस्या ने हमारे पुरातन वैदिक ज्ञान को सुरक्षित व संरक्षित रखा। आदि कवि वाल्मीकि रचित रामायण, महर्शि वेद व्यास रचित महाभारत के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उस समय का विज्ञान ऋशियों की कृपा से आज से कई गुणा अधिक उन्नत स्तर पर था।

15.आधुनिक समय की आवश्यकता -

वर्तमान समय मेंसृष्टि में विकास, शांति, सद्भाव, प्रेम बनाए रखने के लिए अपनी विरासत ईश्वरीय शक्ति से प्राप्त वेदज्ञान का चिंतन, प्रसारण मनन आधुनिक समय की आवश्यकता है। आज के समय में पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते प्रभाव के कारण नैतिक व चारित्रिक पतन बढ़ता जा रहा है। एक बार फिर से हमारे देश में महिलाएं, बालिकाएं खुद को असुरक्षित महसूस करती हैं क्यों न वैदिक शिक्षा को अध्ययन का विषय बनाया जाए ताकि संपूर्ण मानवजाति को उच्च आचार व उच्च शिश्टाचार पैदा हो। ऐसे भावी नागरिक तैयार हो जो मन, वचन, कर्म से श्रेष्ठ हो। वेदानुकूल आचरण से ही मनुष्य सच्चा मनुष्य बनेगा। हमारी ईश्वरीयसृष्टि दुःखों से रहित व सुख-शांति से समृद्ध होगी। आज विज्ञान उन्नति की ओर अग्रसर है। यजुर्वेद में मंत्र 40/41 में ईश्वर की ने स्पष्ट कहा है कि मनुष्य भौतिक उन्नति एवं आध्यात्मिक उन्नति दोनों को साथ-साथ करें। हमने वेदानुसार विज्ञान एवं आध्यात्मिक उन्नति को प्रायः नजरअंदाज किया है। यही कारण है कि जहां मनुष्य पृथ्वी पर भौतिक उन्नति किए जा रहा है वहीं वह दुःख, परेशानी विभिन्न प्रकार के रोग, मानसिक रोग, शारीरिक कष्ट आदि से सदा ग्रस्त रहता है। सब मानव एक ईश्वर की संतान है और सबको प्रेम, भाईचारे से रहने का ईश्वर आदेश देते हैं।

निष्कर्ष -

छान्दोग्य में अग्न्यादि से, ऐतरेय में जलादि क्रम सेसृष्टि हुई। वेदों में कहीं पुरुष, कहीं हिरण्यगर्भ आदि से, न्याय में परमाणु, सांख्य में प्रकृति ओर वेदांत ने ब्रह्मा से सृष्टि की उत्पत्ति मानी है। यहां सब सत्य है परमेश्वर निमित्त और प्रकृति उपादान कारण है। सृष्टि ईश्वर की सबसे सुंदर रचना है। इस सुंदर रचना को सुंदर बनाए रखना हम प्राणीमात्र का कर्त्तव्य है और उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण है प्रत्येक प्राणी के विचार व भाव उच्च व निर्मल हो। प्रत्येक प्राणी के हृदय में दया, सहानुभूति, परोपकार, देशभक्ति का भाव विद्यमान हो। अपने कल्याण के साथ-साथ दूसरों का भी कल्याण देखें। हमारा भाव होना चाहिए।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि परयन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।"

सन्दर्भ ग्रन्थ -

ऋग्वेद, सांख्यदर्शन, वेदान्तसार, श्रीमद्भागवत्, सत्यार्थप्रकाश, ऋकसूक्तसंग्रह, मनुस्मृति।